E-ISSN: 2706-8927
P-ISSN: 2706-8919
www.allstudyjournal.com
IJAAS 2023; 5(4): 54-57
Received: 09-03-2023
Accepted: 15-04-2023

राम नरेश महतो
शोधार्थी, बी.एन. मंडल विश्वविद्यालय, लालू नगर, मधेपुरा, बिहार, भारत

Corresponding Author:
राम नरेश महतो
शोधार्थी, बी.एन. मंडल विश्वविद्यालय, लालू नगर, मधेपुरा, बिहार, भारत

भारत की सांस्कृतिक विरासत और शिक्षा

राम नरेश महतो

DOI: https://doi.org/10.33545/27068919.2023.v5.i4a.1025

सारांश
संस्कृति शिक्षा के अन्य पक्षों को भी किसी न किसी रूप में प्रभावित करती है। जिन समाजों की संस्कृति में वर्गभेद होता है उनमें जन शिक्षा की अवहेलना की जाती है और जिन संस्कृतियों में वर्गभेद नहीं होता उनमें जन शिक्षा की व्यवस्था की जाती है। इसी प्रकार पुरुषप्रधान संस्कृतियों में स्त्रियों की शिक्षा की अवहेलना की जाती है और जिन समाजों की संस्कृति में स्त्री-पुरुष में किसी प्रकार का भेद नहीं किया जाता उनमें स्त्री-पुरुषों की शिक्षा में कोई भेद नहीं किया जाता। इसी प्रकार उद्योगप्रधान संस्कृतियों में उद्योग की शिक्षा और धर्मप्रधान संस्कृतियों में धार्मिक शिक्षा पर अधिक बल दिया जाता है।

कूटशब्द: संस्कृति शिक्षा, वर्गभेद, धर्मप्रधान संस्कृतियों, धार्मिक शिक्षा

प्रस्तावना
भारतीय संस्कृति संसार की प्राचीनतम संस्कृति है। इस संस्कृति की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि समय और शक्ति की झंझावतों से गुजरने के बाद भी यह अपने मूल रूप को बनाए हुए है। आज जब संसार की अनेक प्राचीन संस्कृतियाँ अपना अस्तित्व खो बैठी हैं भारतीय संस्कृति अपने अस्तित्व को बनाए हुए हैं।

भारतीय संस्कृति का मूल आधार अध्यात्म है, उसकी नींव पर ही इसकी सारी इमारत खड़ी है। यह कर्म सिद्धान्त और पुनर्जन्म को मानती है। यह चार वर्ण (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र), चार आश्रम (ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वाणप्रस्थ और सन्यास) और चार पुरुषार्थ (धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष) की संस्कृति है। श्रद्धा, विश्वास और अतिथि सत्कार इसकी अन्य मूलभूत विशेषताएँ इसका पहला टकराव हुआ भारतीय मूल की द्रविड़ संस्कृति से। इसने उसकी पूजा-पाठ एवं भजन-कीर्तन की पद्धतियों को अपनाकर उसे अपने में आत्मसात कर लिया। इसके बाद इसके विरोध में इस देश में जैन एवं बौद्ध धर्म दर्शनों का विकास हुआ। इनके प्रभाव से इस देश में दो नई संस्कृतियाँ विकसित हुईं- एक जैन और दूसरी बौद्ध। इसने जैन धर्म के पाँच महाव्रत (सत्य, अहिंसा, अस्तेय, अपरिग्रह और ब्रह्मचर्य) को स्वीकार किया और उसके पाँच कशाय (काम, क्रोध, लोभ, मोह और मद) को त्यागने पर बल दिया और बौद्ध धर्म की मानव एकता एवं करुणा को स्वीकार कर इनसे भी अपना तालमेल बैठा लिया।

संशोधन और परिवर्द्धन इस संस्कृति की सबसे बड़ी विशेषता है इसीलिए यह अजेय है। वर्तमान में उपरोक्त सभी तत्त्वों को भारत की सांस्कृतिक विरासत माना जाता है।

भारत प्रारम्भ से ही विदेशियों के आकर्षण का केन्द्र रहा है। यहाँ कई संस्कृतियों के लोग आए परन्तु हमारी संस्कृति को प्रभावित नहीं कर सके। मुसलमान जाति ने तो यहाँ 500 वर्ष से अधिक राज्य भी किया और अपने शासनकाल में अपनी इस्लामी संस्कृति का खूब प्रचार एवं प्रसार भी किया, परन्तु भारतीय संस्कृति अपनी जगह अजेय रही। इनके बाद इस देश में यूरोपीय जातियों का प्रवेश हुआ। सर्वप्रथम पूर्तगाली आए, उनके बाद डच, फ्रान्सीसी और अंग्रेज आए। अंग्रेजों ने तो यहाँ 200 वर्षों से अधिक राज्य भी किया और अपने शासन काल में ईसाई धर्म एवं संस्कृति का खूब प्रचार एवं प्रसार भी किया और उसका हमारी जीवन शैली पर कुछ प्रभाव भी पड़ा। हम उनकी भाषा सीखने लगे, उनका साहित्य पढ़ने लगे, उनके जैसे कपड़े पहनने लगे और उनके कुछ रीति-रिवाजों को भी अपनाने लगे। और मजे की बात यह है कि उनकी परतन्त्रता से स्वतन्त्र होने के बाद भी हम उनकी नकल करने में गौरव का अनुभव करते हैं। परन्तु न तो हमने अपनी भाषा छोड़ी है, न अपनी संस्कृति भाषा संस्कृत का सम्मान करना छोड़ा है, न अपने रीति-रिवाज छोड़ें हैं और न अपना धर्म छोड़ा है। हमारी भारतीय संस्कृति आज भी अजेय है।

सच बात यह है कि हमारी भारतीय संस्कृति मूल रूप से संस्कारों की संस्कृति है। स्वामी दयानन्द सरस्वती ने जिन 16 मूल संस्कारों की बात कही है, उनमें से अधिकतर संस्कारों में पूरे भारत के लोगों (मुसलमान और ईसाइयों को छोड़कर) की आस्था है, वे उनका सम्पादन करते हैं। हमारी भारतीय संस्कृति ने इस्लाम और ईसाई संस्कृतियों के भी कुछ अच्छे तत्त्वों को ग्रहण किया है, पर कुछ अपने तरीके से, उन्हें अपने रंग में कुछ ऐसा रंग दिया है कि आज वे उसके अपने तत्त्व हो गए हैं। वैसे भी हमारी संस्कृति उदार संस्कृति है, वह सभी संस्कृतियों का आदर करती है और कहीं से भी जो अच्छा है उसे स्वीकार करने में संकोच नहीं करती। फिर वर्तमान में हमारे देश में लोकतन्त्र शासन प्रणाली है जो सभी मनुष्यों को अपनी-अपनी संस्कृति की रक्षा एवं उसके अनुसार जीने का अधिकार देती है। हमारी इस सांस्कृतिक उदारता के आगे कट्टरपंथी संस्कृतियाँ भी नत्मस्तक हैं। हमारे देश में सांस्कृतिक भिन्नता होते हुए भी एकता है, इसे ही अनेकता में एकता कहते हैं।

जहाँ तक वर्तमान भारतीय संस्कृति और शिक्षा की बात है, हम सांस्कृतिक एवं राजनैतिक, दोनों दृष्टियों से उदारवादी नीति का पालन कर रहे हैं। और यह नीति शिक्षा के उद्देश्य एवं उसकी पाठ्यचर्या के निर्धारण, शिक्षण विधियों के विधान, शिक्षक-शिक्षार्थियों के स्वरूप निर्धारण और विद्यालयों की गति-विधियों के निर्धारण, सभी में अपना रहे हैं। यदि हमारे इस मार्ग में कोई बाधक तत्त्व हैं तो वे हैं कुछ कट्टरपंथी लोग और वोट की राजनीति करने वाले नेता। हमें इन दोनों से सावधान रहने की आवश्यकता है।

भारतीय संस्कृति के सन्दर्भ में हम पाँच तथ्यों का उल्लेख करना आवश्यक समझते हैं। पहला यह कि इस देश में अनेक संस्कृतियों के लोग रहते हैं, इनमें भारतीय मूल की संस्कृतियों में ऊपरी भिन्नता होते हुए भी अन्दरूनी एकता है। दूसरा यह कि भारतीय संस्कृति अपने में उदार एवं प्रगतिशील संस्कृति है, वह कहीं से भी, जो अच्छा है उसे अपने रंग में रंग कर स्वीकार करने में संकोच नहीं करती। तीसरा यह कि यहाँ सभी बच्चे अपने परिवार एवं समाज में अपनी-अपनी संस्कृति सीखते और ग्रहण करते हैं। इसे समाजशास्त्रीय भाषा में स्वसंस्कृतिग्रहण कहते हैं। चौथा यह कि जब बच्चे स्कूल-कॉलिजों में पढ़ते हैं और बड़ा होने पर अन्य संस्कृतियों के लोगों के सम्पर्क में आते हैं तो वे जाने-अनजाने एक-दूसरे की संस्कृति के अच्छे लगने वाले तत्त्वों को ग्रहण करने लगते हैं। इसे समाजशास्त्रीय भाषा में परसंस्कृतिग्रहण कहते हैं। और पाँचवां तथ्य यह कि हमारे भारतीय समाज में सांस्कृतिक दृष्टि से कुछ वर्ग उच्च माने जाते हैं और कुछ निम्न माने जाते हैं; शिक्षा प्राप्त करने और ऊँचे पदों पर पहुँचने के बाद निम्न वर्गीय लोग उच्च वर्गीय लोगों की संस्कृति को ग्रहण कर अपने को उच्च वर्ग में प्रतिस्थापित करते हैं। इस प्रक्रिया को समाजशास्त्रीय भाषा में संस्कृतीकरण' (Culturalization) कहते हैं। वर्तमान में भारतीय समाज में ये तीनों प्रक्रियाएँ एक साथ चल रही हैं परन्तु भारतीय संस्कृति का मूल रूप अपने में आज भी सुरक्षित है। इसमें जो कुछ भी परिवर्तन हो रहे हैं वे उर्द्धगामी परिवर्तन हैं, उनसे हमारी संस्कृति में निरन्तर विकास हो रहा है। यही इस संस्कृति की सबसे बड़ी विशेषता है और इसी विशेषता के कारण यह अजेय है।

वर्तमान भारत में पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव कुछ अधिक तेजी से बढ़ रहा है। अंग्रेजी भाषा के प्रति हमारा मोह पहले से कई गुना अधिक हो गया है, हम अंग्रेजी के बिना अपने को अधूरा समझने लगे हैं और हीन समझने लगे हैं। जहाँ तक रीति-रिवाजों की बात है, बर्थ डे पर केक कटने लगी हैं और

मोमबत्ती बुझने लगी हैं, मैरिज एनवरसरी मनने लगी हैं और मैरिज की सिल्वर, गोल्डन और डायमन्ड जुबली मनने लगी हैं। जिस देश में लोग विवाह के बाद जीवन भर के लिए बंध जाते थे उस देश में विवा विच्छेद होने लगे हैं। छोटे-छोटे नगरों में भी होटल और बार खुल रहे हैं और डांस हॉल खुल रहे हैं। लड़के हिप्पी बने और लड़कियाँ अर्द्धनग्न घूमने लगी हैं। सौन्दर्य प्रतियोगिताओं और फैशन शो का रोग बढ़ता जा रहा है। सांस्कृतिक मूल्य जैसे हमारे जीवन से दूर होते जा रहे हैं। इस सबसे ऐसा लगता है कि देश में सांस्कृतिक संकट पैदा हो गया है। रूढ़ीवादी लोग बहुत चिन्तित हैं।

यदि एक ओर यह बात सत्य है कि किसी समाज की संस्कृति का प्रभाव उसकी शिक्षा पर पड़ता है तो दूसरी ओर यह बात भी सत्य है कि किसी समाज की शिक्षा का प्रभाव उसकी संस्कृति पर पड़ता है। शिक्षा के संस्कृति पर प्रभाव को हम निम्नलिखित रूप में देख-समझ सकते हैं।

1. शिक्षा और संस्कृति का संरक्षण– किसी स्थान की संस्कृति उसकी युग-युग की साधना का परिणाम होती है, इसके प्रति उसका विशेष लगाव होता है और इसे वह सुरक्षित रखना चाहता है। शिक्षा उसके इस कार्य में उसकी सहायता करती है। आज हम देख रहे हैं कि वैज्ञानिक आविष्कारों ने हम भारतीयों के जीवन को बहुत बदल दिया है परन्तु फिर भी हमारी आस्था अपनी संस्कृति भाषा संस्कृत और उसके साहित्य में बनी हुई है, हमारे आदर्श, विश्वास और मूल्य वही हैं जो हमारी संस्कृति के हैं। लाख परिवर्तन होने के बाद भी हम आध्यात्मिकता का आँचल आज भी पकड़े हुए हैं। आखिर यह कार्य कौन कर रहा है ? यह कार्य हमारी शिक्षा कर रही है। यदि शिक्षा की पाठ्यचर्या से संस्कृत भाषा, संस्कृत साहित्य और प्राचीन इतिहास को निकाल दिया जाए तो फिर हम अपनी संस्कृति को खो बैठेंगे।

2. शिक्षा और संस्कृति का हस्तान्तरण– सामान्यतः मनुष्य जिस समाज में पैदा होता है उसी की क्रियाओं में भाग लेकर उसी की संस्कृति को सीखकर उसमें समायोजन करता है और इस प्रकार किसी समाज की संस्कृति एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को हस्तान्तरित होती रहती है परन्तु इस कार्य में शिक्षा की भी बड़ी अहम् भूमिका होती है। कोई भी समाज अपनी आने वाली पीढ़ी में संस्कृति का हस्तान्तरण अपने सही रूप में शिक्षा द्वारा ही करता है, यह बात दूसरी है कि यह कार्य वह अनौपचारिक शिक्षा द्वारा करता है या निरौपचारिक शिक्षा द्वारा या औपचारिक शिक्षा द्वारा। बच्चों को अपनी संस्कृति का सही ज्ञान तो औपचारिक शिक्षा द्वारा ही होता है। यही कारण है कि आज प्रायः सभी समाजों की शिक्षा का एक उद्देश्य सांस्कृतिक विकास है। हाँ, यह बात अवश्य है कि इस सांस्कृतिक विकास से तात्पर्य भिन्न-भिन्न समाजों में भिन्न-भिन्न लिया जाता है।

3. शिक्षा और संस्कृति का विकास– यद्यपि प्रत्येक समाज अपनी संस्कृति को उसी रूप में सुरक्षित रखना चाहता है जिस रूप में वह उसे प्राप्त करता है, परन्तु परिवर्तन तो प्रकृति का शाश्वत नियम है, संस्कृति में भी परिवर्तन और विकास होता है, यह बात दूसरी है कि किसी संस्कृति में इस परिवर्तन एवं विकास की गति बहुत मन्द होती है और किसी में अपेक्षाकृत कम मन्द। परन्तु कोई भी संस्कृति अपने मूल रूप को कभी नहीं छोड़ती। शिक्षा द्वारा एक ओर बच्चे अपनी संस्कृति का ज्ञान प्राप्त करते हैं और दूसरी ओर देश-विदेश की अन्य संस्कृतियों का ज्ञान प्राप्त करते हैं। साथ ही शिक्षा द्वारा उनमें विवेक शक्ति का विकास होता है और उनका दृष्टिकोण विकसित होता है। इस विवेक शक्ति से वे आगे चलकर अपनी संस्कृति के मूल तत्त्वों में से चुनाव करते हैं एवं अपने अनुभव एवं विवेक के आधार पर उनमें से कुछ में परिवर्तन करते हैं और इस प्रकार अपनी संस्कृति का विकास करते हैं। इतना ही नहीं, अपितु वे संसार की अन्य संस्कृतियों के भी तत्त्वों को ग्रहण करते हैं और अपनी संस्कृति का विकास करते हैं। हमारी भारतीय संस्कृति तो एक उदार संस्कृति है, यह तो कहीं से भी, जो अच्छा है उसे ग्रहण करने में संकोच नहीं करती, यह बात दूसरी है कि उसे कुछ अपने रंग में स्वीकार करती है। यही कारण है कि यह संसार की सबसे अधिक समृद्ध संस्कृति है।

4. शिक्षा और सांस्कृतिक– सहिष्णुता संसार में भिन्न-भिन्न समाजों की भिन्न-भिन्न संस्कृतियाँ हैं और सभी समाज अपनी-अपनी संस्कृति को श्रेष्ठ समझते हैं। इससे कभी-कभी सांस्कृतिक टकराव की स्थिति पैदा हो जाती है। यह स्थिति तब बड़ी घातक होती है जब किसी राष्ट्र की विभिन्न संस्कृतियों में टकराव होता है। आज अन्तर्राष्ट्रीयता का युग है, आज सांस्कृतिक संकीर्णता के स्थान पर सांस्कृतिक सहिष्णुता का विकास किया जाता है और यह कार्य शिक्षा द्वारा ही किया जाता है। परिवार और समुदाय के बीच बच्चे अपने समाज की संस्कृति से ही परिचित होते हैं, विद्यालयों में उन्हें देश-विदेश की विभिन्न संस्कृतियों का ज्ञान कराया जाता है और यह ज्ञान मुख्य रूप से इतिहास और भूगोल के माध्यम से कराया जाता

है। और साथ ही उन्हें उन संस्कृतियों की विशेषताओं से परिचित कराया जाता है और इस प्रकार उनमें संसार की विभिन्न संस्कृतियों के प्रति उदार भाव पैदा किया जाता है। इससे वर्ग संघर्ष ही समाप्त नहीं होता अपितु सभी संस्कृतियों में विकास भी होता है।

निष्कर्ष

वर्तमान में किसी भी समाज की शिक्षा मुख्य रूप से उसके स्वरूप एवं धर्म दर्शन राज्यतन्त्र एवं अर्थतन्त्र और मनोवैज्ञानिक तथ्यों एवं वैज्ञानिक आविष्कारों पर निर्भर करती है। और समाज का स्वरूप और धर्म एवं दर्शन उसकी संस्कृति के अंग होते हैं। तब कहना न होगा कि किसी समाज की शिक्षा पर उसकी संस्कृति का बड़ा प्रभाव होता है। दूसरी तरफ किसी समाज की शिक्षा अनेक कार्यों के साथ-साथ समाज विशेष की संस्कृति को सुरक्षित रखती है, उसे एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में हस्तान्तरित करती है और उसमें विकास करती है। आज अन्तर्राष्ट्रीयता का युग है। आज सभी प्रगतिशील समाज अपने बच्चों में सांस्कृतिक सहिष्णुता का विकास करने की ओर प्रयत्नशील हैं और यह कार्य वे शिक्षा द्वारा ही कर रहें हैं। एक वाक्य में हम यह कह सकते हैं कि किसी समाज की संस्कृति और शिक्षा किसी न किसी रूप और मात्रा में एक-दूसरे को प्रभावित करते हैं और यह एक ऐसा चक्र है जो सदैव से चलता आ रहा है और सदैव चलता रहेगा। इस सन्दर्भ में अपना नजरिया कुछ अलग है। पहली बात यह है कि ये सब अभी सभ्यता के अंग भर बने हैं, ये हमारी संस्कृति के अंग नहीं बन पाए हैं। मुट्ठी भर लोग ही इस ओर आकर्षित हो रहे हैं, अधिकतर लोग आज भी सादा जीवन जी रहे हैं। न वे अपनी भाषा छोड़ रहे हैं, न अपने रीति-रिवाज छोड़ रहे हैं और न अपना धर्म छोड़ रहे हैं। यह भौतिकवादी संस्कृति हमारी अध्यात्मवादी संस्कृति पर कभी हावी हो सकेगी, यह सोचा भी नहीं जा सकता। यदि आप दुनियाँ की तरफ नजर उठाकर देखें तो पाएँगें कि लोग इस भौतिकवादी संस्कृति से ऊबने लगे हैं, और सच्चे सुख और शान्ति की तलाश में अध्यात्म की ओर मुड़ने लगे हैं। हमारा तो अपना विश्वास है कि हमारी अध्यात्म प्रधान भारतीय संस्कृति ही संसार को सुख-शान्ति का पाठ पढ़ाएगी और संसार में मानवता की रक्षा करेगी।

संदर्भ

1. जे०ई० एडम्सन- द इंड की जुअल एण्ड द स्नावाइनमेंट, लंदन, पृ०- 77
2. जी० ओरवेल- द इंग्लिश पीपुल कोगिंस, पृ०- 47
3. ओ०ए० ओसर- टीचर पीपुल एण्ड टास्क, टेवी स्टॉक, पृ०- 23-26
4. जी०एस० फर्म- टिचिंग विद फिल्म द ब्रूस पब्लिस कम्पनी, मिलवाकी, पृ०- 46
5. डॉ० सरयू प्रसाद चौबे- शिक्षा के समाजशास्त्रीय आधार, पृ०- 129-133
6. राय चौधरी दत्त मजूमदार- भारत का वृहत इतिहास, पृ०- 139-141
7. वही, पृ०- 42-43
8. तु०एपि० इडि० जिल्द 12, पृ०- 73, पाठ पंक्ति- 39